Vol. IV—No. 45.

THE BIHAR LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES.

Thursday, the 6th May, 1948.

Proceedings of the Bihar Legislative Assembly assembled under the provisions of the Government of India Act, 1935.

The Assembly met in the Assembly Chamber at Patna on Thursday, the 6th May, 1948, at 11-30 A.M., the Hon'ble the Speaker, Mr. Vindhyeshvwari Prasada Varma, in the Chair.

SHORT NOTICE QUESTION AND ANSWER.

INTERVIEW OF CANDIDATES FOR THE POST OF AN ASSISTANT EDITOR FOR THE GOVERNMENT HINDI MAGAZINE, 'BIHAR'.

---

69. Pandit BUDHINATH JHA : Will the Hon'ble Minister in charge of the Education Department be pleased to state —

(*a*) whether it is a fact that the appointment of an Assistant Editor for the Government Hindi magazine "Bihar" was advertised in local papers and applicants were called for an interview on the 26th April, 1948;

(*b*) the number of candidates who came for the interview and how many of them actually interviewed the officer in charge;

(*c*) who was the officer in charge of the interview;

(*d*) whether it is a fact that the officer in charge asked the interviewers very rudely whether they had come with pen and paper for the examination, and on their reply in the negative, the said officer lost his temper, and consequently seven or eight candidates did not take part in the interview;

(*e*) whether Government propose to reopen the matter and give chance to all suitable candidates for appearing again in the interview?

The Hon'ble Mr. BADRI NATH VERMA : (*a*) The answer is in the affirmative.

(*b*) The number of candidates who came for interview was 15 out of which 7 sat for test and were interviewed.

(*c*) Pandit Nandkishore Tewari, Deputy Director (periodicals).

enforce total prohibition throughout the Province immediately and to implement this Ranchi district be taken first.

The motion was adopted.

Mr. Siyid Amin Ahmad :

اب آپلوگ resign کردیجئے ۔

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : Government simply left it to the decision of the House, and that question cannot come up.

STEPS TO TRAIN RIVERS KAMLA AND JIBACHH

The Hon'ble the Speaker : श्री जयनारायण प्रसाद अपना प्रस्ताव पेश करें।

Mr. Jainarayan Jha Veneet : वह तो अभी नहीं हैं मगर उनने मुझको इस प्रस्ताव को पेश करने की इजाजत दी है। ऐसा ही प्रस्ताव मेरे नाम पर भी है। अगर आपकी इजाजत हो तो मैं उसको पेश करूँ।

The Hon'ble the Speaker : पेश कर सकते हैं।

Mr. Jainarayan Jha Veneet : सभापति जी, मेरा प्रस्ताव है कि "यह व्यवस्थापिका सभा सरकार से सिफारिश करती है कि वह कमला और जीवछ नदियों को नियंत्रित करने की समुचित और पर्याप्त कार्रवाई करे।"

Sir, I beg to move:

That this Assembly recommends to Government to take adequate and suitable steps to train the rivers Kamla and Jibachh.

इस प्रस्ताव को पेश करते हुए मेरा निवेदन यह है कि यद्यपि बाढ़ समस्त उत्तर बिहार के लिये एक समस्या हो रही है फिर भी दरभंगा जिला के लिये इसका महत्व बहुत बढ़ गया है। एक समय था जब वह जिला धन-जन के लिये बिहार प्रान्त में बहुत मशहूर था या यों कहिये, सबसे आगे था लेकिन इधर बाढ़ का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि वह जिला उजाड़ सा होता

जा रहा है। यदि शीघ्र इन नदियों का नियंत्रण नहीं किया गया और सरकार ने ध्यान नहीं दिया तो एक बहुत सम्पन्न और धन-जन से पूरित जिला जल्द उजाड़ और वीरान हो जायेगा। उस जिले में बाढ़ के कारण मुख्यतः पांच, छः नदियाँ हैं जिनमें कोशी, कमला, जीवछ, गंडक, बागमती और बलान प्रधान हैं। कोई मिनिस्टर बाढ़ के जमाने में उस ओर जाने की कृपा करेंगे तो उनको इसका ज्ञान हो जायेगा। श्रीमान अनुग्रह नारायण सिंह जी ने तो बाढ़ के समय में इस इलाके का भ्रमण किया है। उन्हें इसकी वास्तविकता का अधिक ज्ञान होगा।

कमला नदी पवित्रता में गंगा ही जैसी है। एक समय था जब कमला का बड़ा सम्मान था और जैसा उसका मान था वैसा ही उसका फल भी होता था। कमला का एक अर्थ लक्ष्मी है। एक समय था जब कमला के कारण दरभंगा जिला हरा-भरा रहता था। दरभंगा के उत्तरी हिस्से में बहुत छोटी-छोटी नदियां मिलेंगी। प्रायः वे सभी नदियां कमला की ही शाखायें, उप-शाखायें हैं। उनकी भी हालत खराब है। कमला नदी की यह हालत है कि वह जल्दी-जल्दी अपनी धारा बदलती रहती है और इसलिए सारे जिले में फैली हुई है। कुछ वर्षों से इसका बुरा रवैया है। पहले जिस इलाके में कमला बहती थी उस इलाके में धान की खेती करने में सुविधा होती थी। एक बार धान रोप दिया जाता था तो फिर उसमें निकौनी, पटौनी की जरूरत ही न रहती थी। अगहन और पूस में तीन-चार मन कठ्ठा पीछे धान होता था। उसके ऊपर से एक मन कठ्ठा पीछे खेसारी भी हो जाती थी। वही हालत जीवछ की थी। दोनों नदियां दरभंगा जिले को वरदान स्वरूप थीं। गंगा के बाद ही कमला का लोग नाम लेते थे। कमला धन देने वाली नदी मानी जाती थी और जीवछ सन्तान देने वाली मानी जाती थी। जीवछ की महिमा के विषय में कहा जाता है कि जिस स्त्री को सन्तान नहीं होती है या जिसकी सन्तान मर जाती है, यदि पति और पत्नी दोनों गठबंधन कर उस नदी में स्नान कर लेते हैं तो उन्हें सन्तान होती है और जीती रहती है। जीवछ सन्तान देने वाली और कमला सम्पत्ति देने वाली। ये दोनों नदियां हमारे जिले के लिये वरदान स्वरूप थीं। मगर इधर कुछ वर्षों से इन्हीं नदियों की वजह से जिला तबाह और उजाड़ हो रहा है। हम चाहते हैं कि दोनों नदियां हमारे जिले में रहें मगर नियंत्रित रूप में रहें ताकि जितनी महत्वमयी

और जैसी जीवन दामिनी पहले थीं वैसे ही अब भी हो जायं।

यह साफ है कि भूकम्प के पहले यह बात उन नदियों के साथ नहीं थी। भूकम्प १६३४ ई० में हुआ था और दरभंगा जिले में इसका प्रकोप बहुत बड़ा था। उससे वहां बहुत बड़ी क्षति हुई थी। वहां धन, जन और मकान की बहुत बड़ी बरबादी हुई थी। इसके साथ ही साथ ऐसा भी मालूम होता है कि नदी के गर्भ में भी बहुत बड़ा परिवर्त्तन हो गया है। जहां पहले कमला और जीवछ नदियों में बाढ़ होने पर पाक आता था वहां अब इन नदियों में बालू आना शुरू हो गया है। यही कारण है कि उस जिले की भूमि की उर्वराशक्ति भी कम हो गयी है। दूसरी बात यह हुई कि कमला और जीवछ के किनारे पर जो बस्तियां हैं वहां अब मलेरिया का भीषण प्रकोप होता है। वहां बस्ती की बस्ती खाली हो गयी हैं और परिवार के परिवार नष्ट हो गये हैं। पंडौल इलाके में जो अब कमला का बाढ़ क्षेत्र हो गया है, घर के घर में एक भी आदमी जीता नहीं बचा है। इस बीमारी के कारण वहां इतने आदमी मरे कि वहां पर रोगी का कोई पथ्य और पानी देनेवाला भी नहीं मिलता था। लाशें गाड़ियों पर ले जायी जाती थीं। जलाने की क्रियायें करने में अशक्त होने के कारण हिन्दू भी मुरदों को गाड़ देते थे या पानी में बहा देते थे। श्राद्ध में शुद्धि के लिए ग्यारह आदमी भी खिलाने को नहीं मिलते थे। सागूदाने से श्राद्ध किया जाता था। इस नदी के कारण अब वहां बहुत बड़ी बरबादी हो रही है और इसीलिए यह जरूरी हो गया है कि इस छोटी नदी की समस्या को इस हाउस के सामने उपस्थित करना पड़ा। पहले ये दोनों नदियां वहां वरदान समझी जाती थीं लेकिन भूकम्प के बाद अभिशाप हो गयी हैं। भूकम्प के पहले इन दोनों नदियों की पूजा होती थी, पूजा तो अब भी होती ही है। लेकिन आज वे वहां के लोगों की बरबादी का कारण हो गयी हैं। कोशी की यहां चर्चा करना आवश्यक मालूम होता है। कोशी इतनी भयानक नदी है कि बिहार सरकार क्या, भारत सरकार में भी जब अंगरेजों का राज्य था और बड़े-बड़े हाकिम शिमला और दिल्ली से बाहर निकलना नहीं चाहते थे, उस समय भी उस नदी की भयंकरता ने वहां के सबसे बड़े अफसर का सिंहासन हिला दिया था। वाइसराय साहब स्वयं आये। मधेपुर और विरौल थानों की बुरी हालतों को खुद जाकर देखा और कोशी को नियंत्रित करने के लिए एक योजना बनाने का निश्चय भी किया। केन्द्रीय सरकार की ओर से

उसके लिए एक योजना तैयार हो रही है। लेकिन यद्यपि कमला और जीवछ छोटी नदियां हैं, कोशी जैसी बड़ी नहीं हैं, फिर भी उससे कम भयंकर नहीं हैं। कोशी के इलाके में बरसात में गांव के गांव टापू जैसा मालूम पड़ते हैं और उसके बाद मीलों झील सा पानी नजर आता है। कोशी के क्षेत्रों में मलेरिया का भीषण प्रकोप होता है। इससे घर के घर में टट्टी लग जाती है और मृत्यु संख्या इतनी बढ़ जाती है कि मुर्दे गाड़ी पर लादकर फेंके जाते हैं। इसी तरह का भीषण रूप कमला और जीवछ ने भी धारण कर लिया है जिससे बाध्य होकर हमलोग अपनी तकलीफें सरकार के सामने रख रहे हैं। इन नदियों का सवाल कोशी जैसा बड़ा सवाल नहीं है और न उतना खर्च ही होगा। कोशी का हिसाब करोड़ों और अरबों में है लेकिन इन नदियों का सवाल लाखों में ही हल हो जायेगा नेपाल से निकलने के बाद दरभंगा जिलेमें जयनगर थाने से लेकर पांच, छः थानोंसे बहती और उनको बरबाद करती हुई कमला नदी कोशी में मिल जाती है। कोशी में मिलने के बाद तो वह कोशी का सवाल हो जाता है। इन पांच, छः थानों का सवाल कोई बड़ा सवाल नहीं है जिसको करने में सरकार को कोई हिचकिचाहट होनी चाहिए। इन छोटी नदियों को आसानी से और कम खर्च में नियंत्रित (trained) किया जा सकता है। इसलिए हम सरकार से आग्रह करते हैं कि सरकार इन दोनों नदियों को नियंत्रित (trained) करने के सवाल को अपने हाथ में ले जिससे वहां के लोगों की जो नुकसानी सालो ब साल होती है वह बन्द हो जाय। हमारा जिला उपज के ख्याल से अपना सानी नहीं रखता था, लेकिन आज इन दो नदियों के कारण वह बरबाद हो रहा है उस जिले को बचाने के लिये सरकार का ध्यान इन दोनों नदियों की तरफ जरूर जाना चाहिए। भूकम्प की वजह से उस इलाके में जो समस्या उत्पन्न हो गयी है उसको हल करने के लिए हमलोगों ने उसे एसेम्बली में उपस्थित किया है। भूकम्प के बाद सारे प्रान्त में जो बाढ़ की समस्या उपस्थित हुई थी उसके लिए १९३७ में एक कांफ्रेंस हुई थी, यही विचारने के लिए कि किस तरह से उसे हल किया जाय। इस समस्या का सबसे बडा शिकार दरभंगा जिला हुआ है। इसलिए हम सरकार से अनुरोध करते हैं कि इस समस्या का समाधान करने के लिए वह जरूर कुछ उपाय सोचे। इसको वह छोटी समस्या समझकर टाल नहीं दे। यह जनता की सरकार है और इसे जनता की भलाई का ख्याल हमेशा रखना चाहिए।

इसलिए हम सरकार का ध्यान इसकी ओर खींचते हैं और उम्मीद करते हैं कि इसको हल करने के लिए वह जल्द से जल्द कोशिश करेगी।

Pandit Dhanraj Sharma : जनाब सदर, जो प्रस्ताव अभी इस हाउस के सामने उपस्थित किया गया है मैं उसका समर्थन करता हूं। यह सही है कि कमला नदी की हालत ऐसी हो गयी है कि उसमें एक दफा बाढ़ नहीं आती है बल्कि साल में दर्जनों दफे बाढ़ आती है और इससे हजारों बीघा जमीन बेकार हो जाती है। मधुबनी शहर के पूरब की तरफ यदि आप जायेंगे तो देखेंगे कि बरसात को कौन कहे, इस वैशाख में आपको कितनी जगहें पोखरा सी मालूम होंगी। कमला नदी कहीं एक जगह ठहरती नहीं और उसकी धारा बदलती रहती है। एक जमाने में इसकी धारा बैगन-पट्टी थाने में थी लेकिन आज इसकी धार मधुबनी पहुंच गयी है और इसका मुनासिब इन्तजाम नहीं होने का नतीजा यह है कि एक तरफ तो सारी जमीन जलमग्न हो जाती है और दूसरी तरफ पानी बिना मारा पड़ जाता है।

जो जगह धन-धान्य से परिपूर्ण था, जहां के लोग सुखी थे, वह आज मरुभूमि बन गया है। आज खजौली थाना खजौली नहीं रहा है। लौकहे थाना, फूलपरास थाना और मधुबनी थाना को इससे कितना नुकसान होता है। वह सब पानी के नीचे चला जाता है। मधुबनी को बांध बांधकर लोग बचाते हैं। फिर भी वर्षा ऋतु में कितने गांव, कितने घर पानी के अन्दर चले जाते हैं। कितने छप्पड़ तक पानी से बह जाते हैं। लोग शहरों को भागते हैं। वहां के लोगों को नावों के सिवा दूसरा और कोई सहारा नहीं रहता है। सरकार यदि अपनी रिपोर्ट को देखे तो उसे पता चलेगा कि कितनी नावें वह इन गांव वालों को देती है।

मधुबनी सब डिविजन बाग-बगीचे के लिये मशहूर था। यहां की जमीन उपजाऊ थी। लेकिन आज इसकी अवस्था दयनीय है। यहां की पैदावार भूमि ने अब अपनी उर्वरा शक्ति खोदी है। आज यहां की जमीन मरुभूमि के सदृश है। यह तो यहां के लोगों की माली हालत है।

अब आप मवेशियों की ओर आइये। मवेशियों को भी इससे नुकसान होता है। उनका पालन-पोषण ठीक से नहीं होता है।

यही नहीं यहां के लोग मलेरिया और कालाजार से पीड़ित रहते हैं।

यह कितना ही दुःखद इतिहास है। ऐसा हुआ है कि गांव के गांव उजड़ गये हैं। घर का घर तबाह है। एक भी आदमी पानी देनेवाला नहीं है। आग भी कोई नहीं दे सकता है। यही अवस्था पंडौल की है। आप मधुबनी में सफर कीजिये तो पता चलेगा कि २, ३, ४ दिनों के अन्दर लोग मलेरिया से कैसे पीड़ित हो जाते हैं। लोग कमला नदी से तबाह हो रहे हैं। और इसका कारण है नैपाल के जंगल। जब तक नैपाल का जंगल ठीक था यहां पर इतनी दिक्कतें न होती थीं। आज बाढ़ आती है और बे रोक-टोक आती है। साल में ३, ४ मरतबा आती है। इससे फसल नुकसान हो जाती है। सन् १९२०-२१ साल से हमलोग बराबर देखते आ रहे हैं कि हर साल बाढ़ आती है और अनेकों बार आती है। लेकिन इसके सम्बन्ध में अब तक कोई काम नहीं हुआ है। लोग कहते हैं कि कमला नदी से फायदा होता है परन्तु मेरा कहना है कि इससे अब फायदा से ज्यादा नुकसान हो रहा है। मेरा तो कहना है कि इसको अगर ठीक से train किया जाय और नदियों को link up किया जाय तो मधुबनी फिर बिहार सूबे का Grainery हो सकता है। मधुबनी सब-डिविजन में जितना अधिक पैदा होता है वह शायद दूसरी जगहों में उतना नहीं होता है। लेकिन दुःख की बात है कि मधुबनी की हालत तबाही एवं बरबादी से खराब हो गई है। नैपाल की हालत बदली तो हमारी भी हालत बदल जायगी। लोगों का यह कहना भी सच है कि भूकम्प की वजह से पानी का प्रवाह बदल गया है। इस area में तो एक ओर अधिक पानी मिलता है और दूसरी ओर बिना पानी के लोग तबाह हैं। मैं गवर्नमेन्ट से सिफारिश करता हूं और आशा करता हूं कि सरकार इस ओर मुनासिब ध्यान देगी।

कोशी का इतना बड़ा सवाल है जिसे गवर्नमेन्ट औफ इण्डिया हल कर रही है। हमारे और सवाल को गवर्नमेन्ट औफ इण्डिया हल कर रही है तभी हल होगी, अन्यथा नहीं। परन्तु क्या हमारे सभी सवालों को गवर्नमेन्ट औफ इण्डिया ही हल करेगी? कोशी की समस्या को हल करने में समय लगेगा। और ५०, ६० लाख अथवा एक करोड़ रुपया लगेगा। आप कमला, जीवछ, बुधुआ और दूसरी-दूसरी नदियों के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि आप इसे अपने हाथ में लें और इनको train करें। अगर आप ऐसा कहते हैं तो आपका अन्न का मसला हल हो जाता है। इसका प्रबन्ध तो

आपको करना है। इन सबके कारण कितनी जमीन बरबाद हो रही है वह सब दूर हो सकता है यदि आपने उचित ध्यान दिये। साथ ही साथ जो लोग कालाजार और मलेरिया से पीड़ित रहते हैं उनको बड़ी शान्ति मिलेगी और वे आपका दिलोजान से शुक्रिया अदा करेंगे। "जय-हिन्द"!

Dr. Saiyid Mhammad Farid :

جناب اسپیکر صاحب !

کملا ندی اور جیبچھہ (Jibachh) ندی کے بارے میں جو تجویز آئی ھے یہ بہت ھی بجا اور درست ھے۔ میں چونکہ مدھوبنی سب ڈیویژن سے elect ھوکر آیاھوں اسلئے میں اچھی طرح جانتاھوں کہ سیلاب کی وجہ سے وھاں ملیریا کی بیماری بہت زیادہ ھوتی ھے ۔ مدھوبنی کے علاقے میں ایک پنڈول علاقہ ھے۔ وھاں ایک مرتبہ ملیریا اتنے زوروں سے شروع ھوا کہ بہت سی جانیں تلف ھوگئیں ۔ یہی نہیں، وھاں سیلاب بھی بہت زوروں سے آتا ھے جسکی وجہ سے پیداوار کی بہت زیادہ کمی واقع ھوجاتی ھے۔ اسکے علاوہ تسترکت بورڈ کی سڑکیں اسقدر خراب ھیں کہ کوئی شخص اس راستے سے چلنے کی ھمت نہیں کرتا۔ ان سڑکوں پر آنا جانا اسقدر محال ھے کہ کوئی سواری بغیر نقصان اٹھائے گزرھی نہیں سکتی ۔ خاصکر بارش کے زمانہ میں توسیدھا راستہ چھوڑکر بہت پھیر سے جانا پڑتا ھے ۔ اسلئے گورنمنٹ سے استدعا ھے کہ کملا اور جیبچھہ ندیوں کا بہت زیادہ خیال کرے اور سڑک اور سیلاب زدہ علاقوں میں کافی دھیان دے جس سے گورنمنٹ کو بہت فائدہ ھوگا اور پیداوار کی زیادتی ھوگی ۔ صرف اتفاھی کہکر اس تجویزکی دل سے تائید کرتا ھوں ۔ ساتھہ ھی اس کے امید ھے کہ میری گزارشات پر خیال کیا جائے گا ۔

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : Sir, the Resolution which has just been moved by my hon'ble friend appears to be a very small one but within these few words complicated issues have been raised. I would like to take the House into confidence and to say that I myself went to Madhubani with my Executive Engineer and investigated this problem and after returning from that place I advised my Executive Engineer to study the problem, try to tackle it and find out some methods to resolve this problem. I would like, Sir, to read to you a note prepared

by the departmental expert after making a preliminary survey. Sir, the hon'ble mover has just said that the Kamla and Jibachh rivers are the backbones of that district. He has also said that river Kamla is said to be responsible for the production of large quantity of paddy in that district. From investigation it appears that the soil of that locality is very fertile and the silt which the river Kamla deposits upon these lands increases the fertility of the area.

I now read, Sir, the note prepared by the expert of my Department and I ask the House to hear it patiently.

"It is probable that Kamla used to flow in the old Kamla Nala. On account of the excessive quantity of detritus brought by the river due to the denudation of the forest and friable nature of rocks forming the catchment area of the Kamla, this channel was choked up and Kamla adopted the course on the east of Jainagar-Madhubani lines. After this change the main course of Kamla changed. About 1925-26 the Patghat branch of Kamla near Lakshmipur village was choked up again on account of the excessive detritus brought by the river. The river crossed the west of railway line near Ramnagar railway station. It is said that a breach in the railway line helped this major change of course. The Kamla then flew in the Sakri branch. This was the state of affair until 1934. River Jibachh which has no independent source but which is fed from the spills of new and old Kamla was practically a dead river initially but Patghat branch was choked and the river crossed the railway line near Rajnagar railway station, Jibachh started getting spills from the new Kamla. The earthquake of 1934 appears to have resulted in further changes. From this year Chuthari Dhar began developing and Kamla (Sakri branch) started choking up. Until in 1937 the whole Kamla was practically flowing in Chuthari Dhar and Sakri was getting only the spill. This change adversely affected Jibachh in as much as its water could not flow freely below Nima village, but was headed up on account of the high water surface level in Chuthari Dhar. Since that time conditions on the banks of Jibachh have become worse.

This history of Kamla shows what is happening in the case of rivers in North Bihar. All these rivers are what, in engineering parlance, is known as Deltaic stage.

In this stage the rivers brake up into innumerable channels. The excessive detrius brought by the rivers chokes up one channel and the river adopts a different course. This phenomena will continue until either (i) the Delta in the Bay of Bengal has moved much further into the Sea, or (ii) some means have been found to cope with the excessive detritus brought by these rivers."

Various methods of controlling river floods have been adopted in the past. These are :—

(i) Embankments along both banks of the rivers.

(ii) Improvment of rivers by cut-offs,

(iii) Improvement of rivers by dredging or silt clearance,

(iv) Spillways to escape excessive discharge,

(v) Flood control by means of dams,

(vi) Re-forestation of the catchment of the rivers with a view to reduce the amount of detritus that the rivers have to carry and

(vii) Improvement of outfalls and provision of additional outlets.

The method of levees or embankments has been tried on extensive scale on the Mississipi in United States of America. Before the construction of levees water flows on both banks of the rivers and carries with it some portion of detritus brought by the river. After the construction of embankments this cannot take place. All the detritus is left in the river channel itself. The river is unable to carry the whole detritus to the sea and part of it is deposited in the channel itself. The result is that gradually the bed rises and the high flood levels rise simultaneously. This requires raising of levees so that they are not overtopped by the flood. The process continues and the levees have to be raised again and again. The higher the levees are, the greater the disaster should any breach occurs in them. It was found on the Mississipi that the levees could not be raised any further and they were forced to provide breaching sections or what the Americans called "fuse plug embankment" where the

embankment breached in case of extraordinary floods and the country side is flooded but valuable lands are saved. These flood embankments also prevent land building operations and deprive the lands of the valuable fertilising silts. Should the marginal embankment be made only in portion of the river, this cuts off spill in that reach. The result of that higher flood passes down the river. Not only do the high flood levels rise in the lower reaches, but they get earlier floods. Construction of flood embankment in a reach is only transference of the trouble to the lower reaches. Sometimes the discharging capacity of the river is improved by silt clearanse or dredging of the river bed. Usually only a limited amount of improvement is possible by this means. The method is expensive and the flood peaks become higher and accelerated in the lower reaches.

In the case of spillways either pucca spillways are made and they are overtopped when the river is in extraordinary flood or breaching sections are provided in the embankment. This method can be adopted only where there is lot of forest area or there is inferior land. It would not be possible to adopt this in the case of Darbhanga district where land is very valuable and every inch of the land is cultivated.

The best method of controlling floods tested so far is undoubtedly control by means of reservoirs. Reservoirs are created by constructing one or more dams on all the important tributaries of the river. These reservoirs retard the flood and considerably reduce the intensity. The nearer to the outfall or all important points requiring protection these dams can be constructed, they more efficacious they are. They are also very much useful in catching detritus. There is no suitable site for a dam on Kamla and Jiwachh in Bihar Province itself. There might be suitable sites in Nepal but the cost of flood control by means is bound to be heavy.

Reforestation of the catchment will have to be done principally in Nepal. The method is expensive in comparison with the results.

Sometimes protection of local areas by names of embankment on all the four sides of the local areas is resorted to. This is very harmful. The areas on the out

side of the embankment are raised on account of the silt dropped by the flood waters while these areas remain low. In course of time they become very insanitary and it would be impossible even to take away the drainage water without pumping. Madhnbani town is a case in point.

It will be seen that the control of river floods is a very complicated affair and it can easily occur that removal of trouble in one area may make the trouble hundred times worse lower down the river. The whole question requires very careful examination. Comprehensive surveys of the river system are required before it can be stated what would be the best way of dealing with the problem. There is acute dearth of staff and materials. This does not, however, mean that nothing can be done or nothing will be done until the comprehensive surveys are ready and staff and materials are available. While marginal embankments can be ruled out the rivers can be improved by removing bed bars formed as a result of earthquake or other reasons. The outfall of the tributaries and offtakes can also be improved. Low lying areas can be silted up or drained. Schemes for the reclamation of Mangarauni chaur north of Madhubani, Pilikhwar and Chakdah chaurs on east of Madhubani, Ramnagar, Katai and Dumri on southwest of Madhubani having a total area of 7650 acres are proposed to be reclaimed at a cost of about a lakh. The scheme has been approved and work will start in the near future. Other improvements will also be taken in hand as staff and materials permit. It is proposed to flush all channels of the river by water from the proposed Kosi Canal during winter so that the comparatively silt free canal water may carry away the detritus dropped by floods and the discharging capacity lost in the summer is restored in the winter. It is a very difficult problem and it would not be wise to interfere with the land building operations of these rivers without sufficient study.

So, I do not like to add much to what I have already said. I would like to tell the House that.....

Dr. Sachchidanand Sinha : These are the observations of experts.

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : After returning from tour I placed this case before the experts and

they have decided that Madhubani town should be protected, and this project.....

Mr. Murli Manohar Prasad : What they have decided ?

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : They have decided to protect the town of Madhubani and something should be done in regard to that. The protection of town does not belong to my department. This is being dealt with by my colleague Mr. Abdul Qaiyum Ansari, Incharge Public Works Department.

Mr. Harinath Mishra : On a point of order, Sir. May I know who are those experts and how many days and hours they have spent on the problem ?

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : After I have read out the opinion of experts the hon'ble member should not have raised this issue. I can only say that we are taking up this work seriously and studying the problems so far we can.

At the present moment we are studying the situation and after our examination we will take up the work. I would request the hon'ble member to withdraw his resolution. Government is doing one part of the business which it can easily do and will take up the other part after investigations and as soon as feasible methods are found out, they will be adopted and difficulties of the people of the areas will be removed.

Mr. Murli Manohar Prasad : Sir, as a representative of the Trihut Division, Non-Muhammadan Urban which includes the subdivisional town of Madhubani, I deem it my duty to support this resolution. I have listened very carefully to the speech just made on behalf of Government and I have tried to follow as carefully as it was humanly possible to do the elaborate note prepared by the Department of Irrigation and just read out by the Hon'ble Minister in charge. The departmental note remainds me of the well known saying about the mountain in labour producing the proverbial mouse (*hear, hear*). The department of Irrigation has been in existence in this province at any rate since the year 1912 when the province was created and I should have expected that the department would tell us as to what exactly they have done so far in regard to the problem. The departmental note is an elaborate

thesis on the theory and practice and flood protection with detailed reference to what has been done in Missisipi and the entire world in regard to flood protection between Timbuctoo and Perrie has been pursued without any detailed information as to what the department has been doing so far as regards the Kamla and Jibachh. We can find from the note that after nearly 25 years of the province having been in existence, the department has now awakened to the problem that the Kamla and Jibachh represent. Only last year during the Ranchi session of the Legislative Assembly when Mr. Hari Nath Mishra put a supplementary question to Government, the attention of the House was drawn to the havoc, to the great sufferings caused to the people round about Madhubani who had to take shelter in the town of Madhubani and had to run from pillar to post to find shelter. Assuming that the past should be buried, that the past should be forgotten, I should have liked the Hon'ble Minister to indicate what has been done since September, 1947 in regard to the problem. The note indicates clearly that up till now the entire thing is in a state of embryo, the department is cogitating, vaccilating and oscilating, nothing beyond that has been done. The problem of training a river is not a new problem. If the Irrigation Department, known as the Public Works Department which is probably known as the Public Waste Department had only done their job properly, they should have tackled the problem years ago. It is a poor consolution to be told that the department has realised its responsibility and its duty to see that every effort is made to cope with the situation. The training of the river is a bitter necessity. The situation all over North Bihar is extremely difficult, extremely acute and extremely unfortunate. Sir, during the last Ministry, if I am not utterly mistaken, we had a special engineer who was entrusted with the task of devising ways and means and to arrange for flood protection. Up till now, although two years have passed, we have heard of no special measures being taken or special care being taken of the problem of flood protection. As is well-known, it is the fashion now-a-days with British historians particularly to be little the administrative capacity and the administrative achievements of the kings and emperors of the old days, but as a matter of fact, the fact remains that if an engineer of today were to go and visit the various districts of the province and study the river

system that obtains in the districts, he would find that kings of the old had devised measures for flood protection, he would find that the entire river system of the district was integrated into one whole and each channel projects itself into another and ultimately had its fall in the river close by with the result that not merely flood protection was a fact, but irrigation was also tackled by that means. I would respectfully invite the attention of the Hon'ble Minister that this problem of the Kamla and Jibachh is not an isolated individual, an apisodic problem but it is a part of a big problem that afflicts the entire division of North Bihar. God save the people if Government were to depend on the officials.....

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : We have got experts.

Mr. Murli Monohar Prasad : Experts are very good servants but they are bad masters.

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : Government have got engineers.

Mr. Murli Monohar Prasad : If the Hon'ble Minister will care to understand the implications of what I am stating, he should have no difficulty in understanding me. Expert are very good servants but very bad masters and the Irrigation Department has been ridden with experts with the result that nothing has been done so far. It is for the Hon'ble Minister in charge to take conserted measures in consultation not only with experts but also with others interested in the problem and have a regular scheme chalked out which scheme it should be the duty of experts to excute within the shortest time possible. The plight of the areas round about Madhubani has been terribly indeed. That plight has been known not only to Government, but to the departmental officials. It is time that the problem were tackled much more honestly, much more seriously than the Irrigation Department has proved itself of doing so far.

Mr. Hari Nath Mishra : Sir, I would like to add a few words.

The Hon'ble the Speaker : Does the hon'ble member want to withdraw his resolution ?

Mr. Hari Nath Mishra : No, Sir, I do not think he wants.

The Hon'ble the Speaker : If the hon'ble member wants to withdraw his resolution, I do not think there will be any occasion for the observations.

Mr. Jainarayan Veneet : कुछ बातें रह गई हैं जिनको बाबू हरिनाथ जी कहेंगे।

Mr. Hari Nath Mishra : हमारा भी एक प्रस्ताव इसी तरह का है जिसका २८ वां नम्बर है।

अध्यक्ष महोदय, हमारे Irrigation मिनिस्टर जब जवाब देने के लिये खड़े हुये तो मुझे बड़ा आशा थी कि वे काम की बातें कहेंगे। पर अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि उनसे मांगी गई थी रोटी और दिये उसके बदले में पत्थर। हमारे Irrigation मिनिस्टिर फलां-फलां कई चौरों का नाम ले चुके हैं और उनके बारे में बहुत कुछ कह चुके हैं। उनका कहना है कि (near future) में काम होगा। लेकिन हमें मालूम है कि वह भविष्य (near future) कितनी दूर है। असेम्बली में बहसें होती हैं, जवाब दिया जाता है पर सभी निष्फल जाते हैं। काम तो कुछ भी नहीं होता है।

The Hon'ble the Speaker : माननीय मेम्बर को जानना चाहिये कि adequate steps के बारे में आप कहना चाहते हैं। अभी इसी के बारे में कहने की जरूरत है।

Mr. Hari Nath Mishra : इसके बारे में ही मैं कहता हूं। अभी हाउस में जो हमारे मंत्री महोदय ने आश्वासन दिया है, तो उसमें उन्होंने कहा है कि staff और material मिलने पर काम बहुत जल्द हो जायगा। अभी उनकी कमी है। मुझे तो पूरी आशा थी कि आप सर्वांगपूर्ण योजने देंगे पर क्या हुआ कुछ भी नहीं। आप जो कुछ भी कहते हैं वह अधूरा ही कहते हैं। मेरा कहना है कि आप नदियों को train कीजिये। हिमालय की तराई से जो नदियां निकलती हैं उनसे dam बना सकते हैं। इसके लिये expert रखें। आप कह सकते हैं और बात भी ठीक थी कि नैपाल सरकार

से negotiation नहीं हुआ है। ठीक है। यह तो पहले की बात थी। पर आजादी के बाद नैपाल सरकार की कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। आप कहते हैं कि आपको staff और material चाहिये। मेरा कहना है कि staff क्या कहते हैं। आफिस में केवल बैठकर दो-चार पुस्तकें देख-दाखकर एक report तैयार कर नोट दे देते हैं। बस।

उनको क्या पता है और सरकार को ही मालूम है कि कोशी नदी के कारण लोग कीट और पतंगों की भांति मर रहे हैं। कितना ही अच्छा होता कि नैपाल से लेकर मुंगेर तक expert द्वारा survey किया जाता। इस तरह से काम कर एक सर्वांग पूर्ण योजना पेश करते। इस तरह से काम कर आप इस विषम समस्या का समाधान कर सकते हैं। Materials की कठिनाइयों का जिक्र करते हैं। लेकिन वह भी हल हो सकता है। लोग मिसीसीपी और मसूरी की बातें करते हैं। और कहते हैं कि उन्हें संतोष नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं कहता हूँ कि कमला और जीवच की अवहेलना आप करते आ रहे हैं। यह अच्छी बात नहीं है। इससे लोगों को कितनी क्षति पहुंच रही है। मैं २, ४ पंक्तियों proceedings of the Patna flood Conferance के पेज नम्बर ३० से पढ़कर सुनाता हूं। श्री सत्यनारायण सिंह जी कमला और जीवच के सम्बन्ध में कहते हैं।

Proceedings of the Patna Flood Conference held on the 10th to 12th November, 1937, in the Sinha Library Hall, Patna. (Page 30).

Mr. Satya Narayan Singh enumerated the problems affecting the Darbhanga district as follows :—

(i) The Kamla having changed its course frequently since 1925 is now causing havoc in many villages. He made the following suggestions :—

(a) Widening the Karahia, Rajnagar, Pilakhwar and Kakna railway bridges between Sakri and Jaynagar.

(b) Converting the causeway north of Madhubani into a big bridge.

(c) Clearing the old beds of the river to divide the current.

(d) Connecting the Dabhari *chaur* with the old river bed near Bhonar by a channel about half mile long.

(e) Constructing a *bandh* from Manisari to Jagaur tank for the protection of Jhanjharpur.

(ii) The Jiwachh now receives a portion of the Kamla floods and damages crops especially between Tarsarai and Darbhanga. He suggested:—

(a) Widening railway bridges and constructing new ones.

(b) Widening District Board Road bridges.

(c) Lowering the trolly line from Tarsarai to Ryam sugar factory.

(d) Connecting the Jiwachh with Gausa ghat.

(e) Repairing the bandh from Malangia to Bhachli.

उस कांफ्रेंस में जो कुछ मंजूर हुआ था और सभी प्रतिनिधियों ने जो राय दी थी उसको मैं सुना देता हूँ। चूंकि यह कांफ्रेंस कांग्रेस की ओर से आयोजित थी, इसलिए हमारे अन्य नेताओं के अतिरिक्त सुयोग्य विशेषज्ञ भी पहुंचे थे। इस समिति के बैठे हुए लगभग ११ वर्ष हो चुके। मगर मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि उस समिति के निश्चय पर और विशेषज्ञों की रिपोर्ट पर सरकार ने कौन-सी कार्रवाई की है। जितने सुझाव सत्यनारायण बाबू ने दिये थे, वह बहुत छानबीन कर दिये थे। और हरेक विशेषज्ञ ने उस रिपोर्ट पर अपनी राय दी थी। मगर यह दुःख से कहना पड़ता है कि अभी तक उस समिति की रिपोर्ट पर कुछ काम नहीं हुआ। हमारे इरिगेशन मिनिस्टर साहब ने इस सम्बन्ध में क्या किया है ?

The Hon'ble the Speaker : आर्डर, आर्डर। आप तो प्रस्ताव के द्वारा आदेश दे सकते हैं। आप प्रस्ताव पास कीजिए और आदेश दीजिए कि मिनिस्टर लोग काम करें।

Mr. Harinath Mishra : हुजूर, मैं कह रहा था कि सत्यनारायण बाबू ने जो सिफारिश करके कागज भेजा था वह बहुत छानबीन करके,

विशेषज्ञों की राय लेकर, इंजीनियरों की राय लेकर के भेजा था। हमारे इरिगेशन मिनिस्टर साहब भी इस चीज को जानते हैं। फिर मैं सरकार से यह पूछना चाहता हूं कि जितनी मांग की गयी थी उसमें एक भी पूरी हुई ? अगर नहीं हुई तो हमलोग क्या उम्मीद कर सकते हैं ?

The Hon'ble the Speaker : प्रस्ताव उम्मीद पर कायम है। प्रस्ताव तो इसी उम्मीद पर पास किया जाता है कि उसपर गवर्नमेंट काम करेगी। आप प्रस्ताव पास कीजिए और आशा रखिये, गवर्नमेंट उस काम को पूरा करेगी।

हम इसलिए जोर दे रहे थे कि गवर्नमेंट इस कार्य को शीघ्र से शीघ्र करने के लिए ध्यान दे। अभी यहां कहा गया है कि कमला जीवर की समस्या केवल दरभंगा जिले की समस्या है। यह ठीक नहीं है। बाढ़ की समस्या बाढ़ पीड़ित ही ममझ सकते हैं। सरकार को जिस मकसद के साथ जिस दृढ़ता से इस काम को करना चाहिये था अभी नहीं कर रही है। इसलिए हम प्रस्ताव पास कर रहे हैं और इसी उद्देश्य से प्रस्ताव पास कर रहे हैं कि सरकार इस समस्या को सुलझाने के लिए जोर से काम करे। मेरा मंत्री महोदय से अनुरोध है कि प्रस्ताव को वह इसी दृष्टि से देखें और काम करें। इन सब कामों के लिए हमको उन बच्चों को लेना चाहिए और उनको शिक्षित करना चाहिए जिससे हमारे बिहार की सर्वांगपूर्ण उन्नति हो सके। अभी थोड़े दिनों की बात है। जाड़े के महीने में हमारे भूतपूर्व गवर्नर जयरामदास दौलतराम वहां गये थे।

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : I would like to draw the attention of the hon'ble member that the name of the Governor should not be discussed in this House. That is the parliamentary convention, and so, the hon'ble member should not refer to anything about the Governor. The name of the king is never used in the Parliament, and therefore, the name of the Governor also should not be used here.

Mr. Hari Nath Mishra : इजाजत नहीं है तो हम छोड़ देते हैं। उसको नहीं कहेंगे।

The Hon'ble the Speaker : जो विवादास्पद हो उसको नहीं कहना चाहिए।

Mr. Hari Nath Mishra : मैं विवाद में पड़ना नहीं चाहता।

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : I do not think that the hon'ble member is right in making a reference to the Governor. Different hon'ble members may have different views about what the Governor has done and discussions may arise. So, the name of a Governor should not be brought in this House.

The Hon'ble the Speaker : गवर्नर महोदय वहां गये थे। उन्होंने वहां जाकर क्या कहा था। इसको आप कह सकते हैं। उनकी बातों की टीका-टिप्पणी न करनी होगी।

Mr. Hari Nath Mishra : गवर्नर महोदय बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में गये थे। उन्होंने वहां जाकर क्या कहा था इसका जिक्र हम करेंगे। उन्होंने वहां जाकर बाढ़ पीड़ितों से मिलकर सारी बातें, उनकी सारी तकलीफें जानने की कोशिश की थी। और इसपर उन्होंने जो कुछ कहा था उसीको हम कहना चाहते हैं।

The Hon'ble the Speaker : आप क्या कहना चाहते हैं? उन्होंने क्या कोई रास्ता (step) बतलाया था?

Mr. Harinath Mishra : उन्होंने अपनी लाचारी जाहिर की थी और उन्होंने कहा था कि यदि मेरे हाथ की बात होती तो मैं विशेषज्ञों से राय लेकर इसकी छानबीन कर यहां जितनी तबाही हो रही है उसको जिस तरह से हो सकता, जल्द से जल्द दूर करके, इनकी तकलीफों को दूर करके इनलोगों को आराम पहुंचाता।

Sardar Harihar Singh : हमको यह सूचना मिली है कि कमला को रखने की जरूरत नहीं है। वह बहुत बदमाश नदी है। उसको बांध करके रखना चाहिए।

Mr. Radhakant Chaudhary : यह तो दूसरे जिले के लोगों पर निर्भर करता है।

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : I would like a decision from the Chair whether an action of the Governor can be brought before the House. If it is

brought, it may become a matter of discussion, and therefore, it has been established in the British Parliament that the name of the king should not be brought before the House, because a controversy may arise, and we may discuss the opinion of the Governor.

The Hon'ble the Speaker : The Governor should be kept beyond controversy in this House. A mere statement that the Governor went to a certain place, said such & such things should not become a matter of controversy. What schemes he suggested, or what devices he advocated may be referred to here with my leching upou his conduct. If any member prceeds to cost any reflection upon his conduct as Governor the chair will not allow it.

Sardar Harihar Singh : हम जो पूछना चाहते थे उसका जवाब नहीं मिला।

The Hon'ble the Speaker : माननीय सदस्य जवाब देंगे।

Mr. Harinath Mishra : हुजूर, हम लोग कमला को रखना चाहते हैं। मगर वह पागल हो गई हैं। इसलिए उसको हम काबू में लाकर रखना चाहते हैं। पागल बनाकर नहीं रखना चाहते हैं।

The Hon'ble Mr. Ram Charitra Sinha : Sir, when I gave the note of the expert, I thought that the hon'ble mover of the resolution will withdraw it, and the motion would not be discussed further; but to my great surprise, I found that of all persons, my hon'ble friend who represents Tirhut Urban constituency intervened in the debate and tried to place before the House things which I would like to say, may be fit for other places, but not for this House. First, he started, as is usual with him, criticising the department about long standing grievances against that Government which was at one time here but which has gone out now. Then he came to criticise the present system of Government. When he was speaking, I think that the hon'ble member had forgotten that the Government against which he has grievances is no more here, and it is now the Government which he has established. He should have pointed out where the present Government has failed in discharging its responsibilities.

Mr. Murli Manohar Prasad : What have the Government been doing for these two years?

The Hon'ble Mr. Ramcharitra Sinha : We have been studying the problem and making examination which must take plenty of time. It is not a problem which can be studied and decisions taken within a few days or within even a few months. It will necessarily acquire years and the hon'ble member should have patience.

I can tell the hon'ble members emphatically that the Government have thoroughly examined this problem and it is receiving the best attention of Government in the Department concerned. The problem has to be examined from various aspects and Government must satisfy itself that the scheme should not in the long run prove to be harmful to the people. The hon'ble member has said that the Department is doing nothing about it for the last two years. I would like to tell the hon'ble member that the problem of river training is not a simple one and I think that if he could take the trouble of studying this problem he would himself say that what Government has been able to do during these two years is really appreciable.

The hon'ble member has also referred to the flood problem and quoted the name of a great Engineer who wrote something of which my hon'ble friend is much enamoured of. I know much of that expert Engineer and better than the hon'ble member claims to know. I know he can write on paper many things but in actual works he is no better than a poll.

I would like to tell the hon'ble member, who spoke last; about the Kosi problem and the Nepal, that this Kosi problem is a difficult problem. The Government of India, who are undertaking its execution, could not take it up without the permission of the Government of Nepal because the sources of the rivers are in Nepal territory. As soon as the permission of the Nepal Government is obtained the work will be taken up in hand. The hon'ble members must know that this Government is not a Fascist Government and we have to be very strict in observing laws, rules and regulations. The Drainage and Irrigation Act is in operation and all the provisions given in that Act must be satisfied before the execution of the work can be taken up. Therefore some amount of delay is inevitable.

In the end I would assure the hon'ble members that Government are fully alive to their responsibility in this

matter and they are doing all that is possible and shall continue to do so in future. Where necessary Government will also benefit by the advice of the hon'ble members but where the advice of the experts of the department is required Government will be guided by that advice.

With these words, Sir, I would suggest to the hon'ble member to withdraw his Resolution.

Mr. Jainarayan Veneet : सभापति जी, माननीय मंत्री महोदय ने जिन जोरदार शब्दों में हम लोगों को आश्वासन दिया है उससे हमको तसल्ली हो गई कि कमला और जीवछ के बारे में हमारा मन्त्रिमण्डल पूरा ध्यान रखता है और जल्द से जल्द मुनासिब कार्रवाई जरूर की जायेगी। इस आश्वासन के बाद हम प्रस्ताव उठा लेना चाहते हैं।

हाउस की इजाजत से प्रस्ताव उठा लिया गया।

The motion was, by leave of the Assembly, withdrawn.

APPOINTMENT OF A PROVINCIAL PLANNING COMMITTEE FOR SPEEDY DEVELOPMENT OF THE PROVINCE.

Pandit Girish Tewari : सभापति जी, जो प्रस्ताव मुझे इस हाउस के सामने पेश करना है वह यह है कि:—

This Assembly recommends to Government to appoint a Provincial Planning committee with powers to form such committees to chalk out co-ordinated plans for speedy development of the Province in all its important aspects.

जब से हमारा देश आजाद हुआ है, हमको यह पहला मौका मिला है कि हम अपने प्रान्त को अपनी राय के मुताबिक बनावें। यह बहुत जरूरी हो गया है कि हिन्दुस्तान के एक अंग की हैसियत से दुनिया के साथ हर मामले में हम मुकाबला कर सकें और अपनी हालत को सुधारें। इसके लिए एक Planning Board या Planning कमिटी बनाने की आवश्यकता है जो यह सोचे कि इस प्रान्त को economically sound बनाने के लिए क्या किया जाय। बिहार के Transport को, बिहार के वाणिज्य (Business)